पाठ 6. एक बूँद

पाठ का परिचय

बादलों की गोद से निकलकर जैसे ही एक बूँद आगे बढ़ी, उसके मन में आशंका से भरे अनेक प्रश्न उठने लगे और एक आह निकली कि इस प्रकार क्यों मैं बादलों को छोड़कर चल पड़ी। असुरक्षा का भाव उसे घेरने लगा। वह सोचने लगी कि पता नहीं मेरे भाग्य में क्या लिखा है। मैं बचूँगी या मिट्टी में मिल जाऊँगी। किसी अंगारे पर गिरकर जल जाऊँगी या कमल के फूल की पँखुड़ियों पर गिर पड़ूँगी। उसी समय हवा का एक तेज़ झोंका आया। बूँद समुद्र की ओर उदास भाव से चल पड़ी। उस समुद्र में एक सुंदर सीप का मुँह खुला था। वह उसी में जा पड़ी और मोती बन गई। कवि कहते हैं कि लोग यूँ ही घर से बाहर निकलने से पहले झिझकते हैं। लेकिन घर का छोड़ना अक्सर उन्हें कुछ खास बना देता है, जैसा बूँद के साथ हुआ।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

संघर्ष करने पर ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। कर्म करना सदैव अच्छे परिणाम की ओर ले जाता है। जो लोग डूबने के डर से नदी के किनारे बैठ बहते हुए पानी को ही देखते रहते हैं वे जीवन में कुछ नहीं कर पाते। पानी के प्रवाह के साथ बहते हुए आगे बढ़ने वाला व्यक्ति ही तैरना सीख पाता है।

पाठ का वाचन

कविता को लय के साथ कक्षा में दो-तीन बार पढ़ें। कठिन शब्दों के अर्थ बताते हुए कविता का सरलार्थ करें। कविता में आए तुकांत शब्दों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करें – बढ़ी-कढ़ी, धूल-फूल, अनमनी-बनी, घर-कर। अंत में बच्चों को कविता कंठस्थ कर कक्षा में सुनाने को कहें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर बच्चों से कक्षा में चर्चा करें –

- पानी की बूँद सीप के मुँह में गिरने पर क्या बन जाती है?
- यदि यही पानी की बूँद सीप के मुँह में ना गिरती तो क्या होता?
- कर्म करने से हमें क्या प्राप्त होता है?
- घर से बाहर निकलना अच्छा क्यों होता है?
- 'संघर्ष ही जीवन है।' – क्या तुम इसे सच मानते हो?